

कलीसिया में पुरुष और स्त्री की स्थिति, भूमिका और सेवा पर घोषणा

हम, अर्थात् अल्गोय (Allgäu) और जर्मनी के अन्य क्षेत्रों के कुछ पुरुष, जो यीशु के पीछे चलने का प्रयास करते हैं, परमेश्वर के सामने उसके वचन के द्वारा इस समझ पर पहुँचे हैं कि स्त्री की बाइबलीय भूमिका के विषय में अपने दृष्टिकोण और मत में हमने भूल की है। इस समझ को हमने इस घोषणा में संक्षेप में लिखा है और इसके साथ हम सार्वजनिक रूप से सामने आ रहे हैं। बहुत-से विश्वासी पुरुष पहले से ही स्त्री और पुरुष की समानता के इस दृष्टिकोण को मानते हैं, जो हमारे दृढ़ विश्वास के अनुसार परमेश्वर के विचारों से अधिक मेल खाता है। फिर भी अभी तक बहुत-से मसीही, जिनके लिए बाइबल (हमारी तरह) परमेश्वर का अटल मापदंड है, यह मानते हैं कि पुरुष और स्त्री का समान दर्जा नहीं है और बाइबल की शिक्षा के कारण हो भी नहीं सकता। हमारा आह्वान उन्हीं से है कि वे इस विषय में पवित्रशास्त्र का एक बार फिर अध्ययन करें और परमेश्वर की योजना और सृष्टि की व्यवस्था को (पतन से पहले और मसीह में उद्धार में) पहचानें। हम इस विषय पर अब और चुप नहीं रह सकते, क्योंकि इसके परिणाम और प्रभाव कलीसियाओं के लिए हानि हैं और प्रभावित स्त्रियों में कभी-कभी बड़े घाव और गहरी असुरक्षा उत्पन्न करते हैं। हमने स्वयं दशकों तक इस गलत दृष्टिकोण का बचाव किया, इसकी शिक्षा दी और इसके अनुसार जीवन जिया। इसलिए यह अत्यंत प्रासंगिक और बहुत महत्वपूर्ण है कि हम पुरुष और स्त्री की स्थिति और भूमिका को कैसे देखते हैं।

हम किसी को उकसाना नहीं चाहते, यद्यपि इस विषय में बिना किसी इरादे के भी इससे बचना लगभग असंभव है। हम यह भी जानते हैं कि यह प्रश्न उद्धार के लिए निर्णायक नहीं है, फिर भी कलीसिया का जीवन तो प्रतिदिन इससे प्रभावित होता है।

हम सब पुरुषों को आमंत्रित करते हैं कि वे अभी या बाद में इस वक्तव्य से जुड़ें और अपना नाम प्रकाशित करवाकर इसकी घोषणा करें।

हमारी समझ क्या है, आज हम इसे कैसे देखते हैं?

हम विश्वास करते हैं कि बाइबल पुरुष और स्त्री की समानता और एक दूसरे के अधीन रहने की शिक्षा देती है, न कि एकतरफ़ा अधीनता की। लिंगों की परमेश्वर-प्रदत्त भिन्नता से एक दूसरे की पूर्ति निकलती है। बिना पदानुक्रम के, और कलीसिया में सेवा और अगुवाई के सब क्षेत्रों में स्त्रियों और पुरुषों की पूरी सहभागिता के साथ।

“परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को अपने स्वरूप में सृजा। उसने दोनों को इस संसार पर प्रभुता करने के लिए नियुक्त किया। यह दायित्व उसने मनुष्यों से कभी वापस नहीं लिया। स्त्रियों से भी नहीं। पुराने नियम में हम देखते हैं कि परमेश्वर बार-बार स्त्रियों को बुलाता है और उन्हें काम सौंपता है। कि वह उन्हें रानियों (एस्तेर), भविष्यद्वक्त्रियों (जैसे हुल्दा, मरियम, दबोरा) और न्यायियों (दबोरा, न्यायियों 4:4) के रूप में आशीष देता और अधिकार देता है। नए नियम में हम देखते हैं कि यीशु स्त्रियों को शिक्षा देता है (लूका 10:39), उन्हें चंगा करता है (मत्ती 9:20-22), उन्हें छुड़ाता है (लूका 8:2), स्त्रियों का आदर करता है और उन्हें काम सौंपता है; अपने पुनरुत्थान के बाद वह उन्हें प्रचार के लिए भेजता है (मत्ती 28:10, 18-20)। पहली कलीसियाओं में हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा पुरुषों और स्त्रियों पर एक समान उतरा (प्रेरितों के काम 2:4, 17-21)। इस आत्मा ने दोनों को कलीसिया के लिए एक समान आत्मिक वरदान दिए (1 कुरिन्थियों 12), ताकि दोनों कलीसिया में सक्रिय रूप से भाग लें, कि

वे अगुवाई के पदों पर थीं (रोमियों 16) और कि उन्हें भी पुरुषों की तरह ही सताया गया। कलीसिया के इतिहास में यह बात ध्यान खींचती है कि ठीक आत्मिक जागृति और पुनर्जागरण के समयों में बहुत-सी स्त्रियाँ शामिल थीं और हैं। इसलिए हस्ताक्षरकर्ता यह मत रखते हैं कि स्त्रियाँ पुरुषों की ही तरह बुलाई गई हैं और वरदान पाई हुई हैं, कि वे यीशु मसीह की महान आज्ञा को पूरा करें और कलीसियाओं में अगुवाई के कार्य सँभालें, जिनमें प्रचार करना और शिक्षा देना भी सम्मिलित है। परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए पुरुषों और स्त्रियों को मिलकर, बिना पदानुक्रम के भेद और सत्ता-संघर्ष के, एक दूसरे के अधीन रहते हुए, आदर और प्रेम के साथ इस संसार में परमेश्वर के राज्य को फैलाना चाहिए। यह केवल मिलकर ही अच्छी तरह होता है।”¹

एक बार फिर संक्षेप में, हम इस दृढ़ विश्वास के पक्ष में खड़े हैं:

- पुरुष और स्त्री दोनों समान रूप से परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं, पहली सृष्टि में और नई सृष्टि में (कुलुस्सियों 3:10; 2 कुरिन्थियों 3:18)।
- पुरुष और स्त्री दोनों को समान रूप से सृष्टि का दायित्व और उसके लिए परमेश्वर की आशीष मिली है (उत्पत्ति 1:26-30)।
- छुड़ाए हुए लोग - पुरुष और स्त्रियाँ - “मसीह में” समान हैं; वे उद्धार में एक ही स्थिति के सहभागी हैं (रोमियों 10:12-13; गलातियों 3:28; 1 कुरिन्थियों 11:11)।
- कलीसिया की अगुवाई का स्वभाव पदानुक्रम पर नहीं, बल्कि सेवा करने वाली अगुवाई पर आधारित है और पुरुषों और स्त्रियों पर समान रूप से लागू होता है (1 कुरिन्थियों 1-2; 9:19; 16:16; मत्ती 20:25-28; लूका 22:25-27)।
- कलीसिया में एक दूसरे के अधीन रहना स्त्रियों और पुरुषों के समान दर्जे को पहले से मानता है (इफिसियों 5:18-21; गलातियों 5:13; रोमियों 12:10; इफिसियों 4:2)।
- विवाह में एक दूसरे के अधीन रहना पुरुषों और स्त्रियों की समानता को पहले से मानता है (इफिसियों 5:21-22; कुलुस्सियों 3:18-19; तीतुस 2:4)।
- मसीह की देह की एकता पुरुषों और स्त्रियों के समान दर्जे को पहले से मानती है (1 कुरिन्थियों 12:25)।
- सब विश्वासियों का याजकपद पुरुषों और स्त्रियों की समानता को पहले से मानता है (2 कुरिन्थियों 3:12-18; कुलुस्सियों 3:16; 1 कुरिन्थियों 14:26; 1 पतरस 2:9; इब्रानियों 10:19-22)।
- आत्मा के वरदान कलीसिया में पुरुषों और स्त्रियों की समानता को प्रकट करते हैं (1 कुरिन्थियों 12-14; रोमियों 12:6-8)।
- मसीह में स्वतंत्रता पुरुषों और स्त्रियों की समानता को पहले से मानती है (गलातियों 3:28; 5:1; 1 थिस्सलुनीकियों 2:7)।
- मसीह में आरंभ हो चुकी नई सृष्टि स्त्री और पुरुष की समानता को पहले से मानती है और इस बात की पुष्टि करती है कि दोनों लिंग एक दूसरे के पूरक हैं (1 कुरिन्थियों 7; 1 तीमुथियुस 4:3; इफिसियों 2:11-22)।

हमारा दोष-स्वीकार और क्षमा की विनती

इस अंगीकार के हर हस्ताक्षरकर्ता पर आवश्यक रूप से सब कुछ लागू नहीं होता, पर हमारे विवेक ने हमें जो दिखाया है, उसे हमने इकट्ठा किया है, क्योंकि इसमें से कुछ भी अनकहा नहीं रहना चाहिए। हमने वैसा व्यवहार नहीं किया जैसा पवित्रशास्त्र हमसे कहता है। वही, और कुछ नहीं, हमारा बाध्यकारी मापदंड है। संसार और

उसकी युग-भावना हमारी प्रेरणा या हमारा आदर्श नहीं हैं। इसलिए हम स्वयं को खुले और निर्मम पाप-अंगीकार के लिए बुलाया हुआ पाते हैं। हम आशा करते हैं कि ये शब्द मसीह में बहनों के कानों और हृदयों तक पहुँचेंगे। साथ ही हमारा पश्चात्ताप हमारे सृष्टिकर्ता की ओर है:

याहवे एलोहीम, पुरुष और स्त्री के सृष्टिकर्ता, हमें क्षमा कर कि हमने ऐसे सोचा, माँगा और व्यवहार किया मानो स्त्रियाँ समान दर्जे की नहीं, बल्कि अधीनस्थ हों। मानो वे बराबरी के स्तर पर हमारी सहभागी नहीं, बल्कि हमसे एक सीढ़ी नीचे हों।

हमें क्षमा कर कि हमने स्त्रियों को अपने वरदानों को पूरी तरह और स्वतंत्र रूप से विकसित करने से रोका। हमें खेद है कि हमने स्त्रियों की स्वतंत्रताओं को सीमित किया, कि हमने उनके वरदानों की उपेक्षा की, कि हमने उनकी आवाज़ों को चुप करा दिया।

प्रभु यीशु, हमें क्षमा कर कि हमने सोचा कि स्त्रियों को सभा या आराधना सभा में चुप रहना चाहिए और वे शिक्षा नहीं दे सकतीं और अगुवाई नहीं कर सकतीं।

हम अपनी पत्नियों और प्रभु में अपनी बहनों के सामने, परमेश्वर के राज्य की सब सहकर्मियों के सामने अंगीकार करते हैं कि हमने आपको पदानुक्रम के अनुसार पुरुष के अधिकार के नीचे देखा है! हमें इस ग़लत दृष्टिकोण के लिए क्षमा कीजिए, जिसके बारे में हम सोचते थे कि यह ईश्वरीय और बाइबलीय है! हम सचमुच यह समझते थे कि हम परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं और उसके वचन का पालन कर रहे हैं, और पीछे मुड़कर देखने पर हमें इस पर लज्जा आती है।

हमें क्षमा कीजिए कि हमने कलीसिया के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर आपके बिना चर्चा की और निर्णय लिए। हमने आपकी सलाह नहीं ली, जबकि ये निर्णय आप पर भी उतना ही प्रभाव डालते थे! हमने ऐसा व्यवहार किया मानो हमें आपकी आवश्यकता नहीं, उससे भी बुरा, मानो आप वहाँ थीं ही नहीं।

हमें क्षमा कीजिए कि आपको, और जो कुछ आपने यीशु के लिए किया और करना चाहा, उसे हमने हमेशा पदानुक्रम की दृष्टि से परखा, उसमें दोष निकाले, उसे कम आँका और कभी-कभी तो उसकी निंदा भी की।

हम पुरुष विफल हुए हैं। हम अक्सर और बिना जाने स्वार्थी, प्रभुत्व जमाने वाले और भेदभाव करने वाले “माचो” और सब कुछ बेहतर जानने का दावा करने वाले लोग थे। अपने प्रति अंधे। आप स्त्रियों और आपकी बुलाहटों और वरदानों के प्रति अंधे। और इसलिए जीवन के इस प्रश्न में परमेश्वर, अपने सृष्टिकर्ता के प्रति भी अंधे।

हमें क्षमा कीजिए जहाँ हमने आपका अनुचित लाभ उठाया। हमें क्षमा कीजिए जहाँ हमने आपको आगे कर दिया और आप पर निर्भर रहे, जहाँ हमें स्वयं ज़िम्मेदारी उठाकर आगे बढ़ना चाहिए था और आप उचित ही इसकी अपेक्षा कर सकती थीं।

हमें हमारी उदासीनता के लिए क्षमा कीजिए – उस बात के प्रति जो आपको उस भूमिका में कठिन लगी जो हमने आपको सौंपी, जिसने आपको चोट पहुँचाई और जिसे आप कभी समझ नहीं पाईं। हमें क्षमा कीजिए कि हमने इन भेदभाव भरे दृष्टिकोणों और शिक्षाओं के विषय में आपसे आपकी भावनाएँ नहीं पूछीं। हमें क्षमा कीजिए कि हम आपके पक्ष में खड़े नहीं हुए।

हमें बहुत खेद है। हमने भूल की।

हम प्रतिबद्ध हैं कि हम हर संभव प्रयास करेंगे कि स्त्रियों का आदर करें, उन्हें आगे बढ़ाएँ, उनका मूल्य समझें, उनकी प्रशंसा करें, उनकी सुनें और उनका सम्मान करें। हम दृढ़ता से प्रतिबद्ध हैं कि हम स्त्रियों को विश्वास में, अगुवाई में और जीवन में समान अधिकार वाली सहभागिनों के रूप में आमंत्रित करेंगे और बाइबलीय समानता का पालन करेंगे और उसे बढ़ावा देंगे।

उठिए! स्वतंत्र रहिए! आनंद से प्रभु की सेवा कीजिए!

हम सबको कदम उठाना है और ...²

सम्मिलित होना एक सकारात्मक संवाद में, जिसमें हम उन गलतियों और उस पीड़ा पर विलाप करें जो हमने पहुँचाई है, उसके लिए पश्चाताप करें, अपनी सोच बदलें और मेल-मिलाप खोजें; इस दृढ़ विश्वास के साथ कि यह स्त्रियों, लड़कियों, पुरुषों और लड़कों के लिए मसीह के द्वारा अधिक सामर्थ्य दिए जाने की दिशा में पहला कदम है।

सराहना करना। हम संसार भर में यीशु की कलीसिया में स्त्रियों की शक्ति और साहस, उनके वरदानों और उनकी सेवा की सराहना करते हैं।

समर्पित करना। अपने वरदानों और संभावनाओं को परमेश्वर को समर्पित करना, ताकि उनके द्वारा स्थानीय और विश्वव्यापी कलीसिया को उसके बढ़ने और परिपक्व होने में दृढ़ किया जाए, मसीह के उदाहरण और उसकी सेवा करने वाली अगुवाई का अनुकरण करते हुए।

स्वयं को प्रतिबद्ध करना स्त्रियों और पुरुषों के आपसी सहयोग के लिए।

सुसज्जित करना। स्त्रियों और लड़कियों को यीशु की कलीसिया में और समाज के सब क्षेत्रों में अगुवाई के कार्य सँभालने के लिए सुसज्जित करना, जिसमें प्रशिक्षण, विकास और नवीन संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग सम्मिलित है।

20 मई 2021

यदि आप इस घोषणा का समर्थन करना चाहते हैं, चाहे वह केवल यहाँ रखे गए उस दृष्टिकोण से सहमति ही हो जिसे आप हमेशा से मानते आए हैं, तो अपने नाम के साथ मुझे hj-ronsdorf@t-online.de पर ई-मेल भेजिए। यह घोषणा www.frauen-vergebt-uns.de वेबसाइट पर प्रकाशित और अद्यतन की जाती है।

Hans-Jörg Ronsdorf

Ingo Damith

Tobi Stricker

Wolfgang Klöckner

Jochen Gerbershagen

Fridtjof Wandt

Emil Wagner

Klaus Sydow

Christian Beese

Rolf Stücher

Bernd Hüsken

Bernd Bessler

Christof Lenzen

Daniel Blatt

टिप्पणियाँ

1. यह पाठ Elke Werner का है और यहाँ उनकी कृपापूर्ण अनुमति से उद्धृत किया गया है। <https://www.wings-online.de/>
2. जून 2019 में एम्स्टर्डम में जारी "सब मसीहियों के नाम आह्वान" से लिया गया।